फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 129 मार्च 1999

काम कम । बातें ज्यादा ।।

घटना बनाने, खबर बनाने की दलदल

रोजमर्रा का हमारा घटनाहीन जीवन नीरस है। क्यों है नीरस ? यह हमारी आपसी बातचीत के लिये एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है।

ड्युटी के लिये तैयार होने के वक्त की अफरा-तफरी व झिक-झिक। दौड़ाती हैं सड़क पर खतरनाक सूइयाँ घड़ी की। फैक्ट्री में दाखिल होते ही सामने मुँह बाये खड़े उबाऊ व बोझिल टारगेट। खटने के बाद निकलते समय गेट पर तलाशी। वापसी में सब्जी .... पत्नि: "अरे देखो तो।" पति : " सो जा चुपचाप। चालीस टायर बना कर आया हूँ।"

हमारे फेफड़ों में जमते कण और रेशे। हमारे फेफड़ों को छीलते, बेहाल करते रसायन। फूलते साँस के संग पेट के अनेक रोग-विकार। जोड़ों के दर्द और बदरंग करते चर्म रोग। खून-खुराक की कमी से लकवा और दिल के रोग। कैन्सर. .... तन को कुचलते इन रोगों के संग-संग मन को मसलती बीमारियों की भरमार है।

आम बातों में राहतें

पड़ोसियों से अच्छे रिश्ते बना कर, घर-परिवार में मेल-मिलाप द्वारा हम ड्युटी की जल्दबाजी वाले तनावों-झँझटों-बखेड़ों को कम करते हैं। अपने सहकर्मियों के साथ मिल-बैठ कर हम घड़ी की सूइयों की चुभन को कम करते हैं; अपने बोझे के बढने की गति पर रोक लगाते हैं ; अपमानजनक व्यवहार पर लगाम लगाते हैं। यह हम सब प्रतिदिन सामान्य तौर पर करते हैं।

अपने कदमों पर चर्चा ?

हर एक अपनी तकलीफों को कम करने की कोशिशें करता-करती है। यह आम बात है। सामान्य है इसलिये यह कोई घटना-इवन्ट नहीं है। इसलिये हमारी प्रतिदिन की क्रियायें खबर नहीं बनती। "ये तो रोज-रोज के रोने हैं; ये कोई खास बात नहीं हैं" के फिकरे हमारे जीवन और हमारे अपने कदमों के महत्व को नकारते हैं। फिकरेबाजी के दबदबे व दबाव के चलते हम भी अपने रोजमर्रा के जीवन पर चर्चायें कम ही करते हैं। इस से हर दिन की जलालत और उस से पार पाने के लिये प्रत्येक द्वारा उठाये जाते कदमों पर बातचीतें, अनुभवों के आदान-प्रदान सिकुड़ते हैं। सामान्य को महत्वहीन प्रस्तुत करना मैनेजमेन्टों के लिये अखाड़े बनाने का आधार-स्तम्भ है।

घटना-इवन्ट-खबर

एक-दूसरे के जीवन और अनुभवों व विचारों के बारे में जो चर्चायें सामान्य तौर पर होती रहती हैं उनके लिये भी समय व स्थान को सिकोड़ने के लिये रेडियो-टी वी-अखबार-पत्रिकाओं के जरिये फिल्मों-हीरो-हिरोइनों-खेलों-खिलाड़ियों - सत्ताधारी व विपक्ष के नेताओं - एक्सीडेन्टों-हत्याओं-बलात्कारों-बाढ - भूकम्प - अकाल-युद्धरत पक्षों पर खबरों की भरमार परोसी जाती है।

फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्टें और उनका लीडरी विभाग एग्रीमेन्ट, हड़ताल, तालाबन्दी, मार-पीट, चार्जशीट-सस्पेन्ड, टरमिनेट, ट्रान्सफर आदि घटनाओं की रचना करते हैं, इन्हें खबर बनाते हैं। कोई घटना-खबर फैक्ट्री के अन्दर हमारी अपनी सामान्य गतिविधियों और उनकी चर्चाओं को बहुत कम कर देती है। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से अपनी फैक्ट्री के बारे में चर्चा में तो मैनेजमेन्ट व उसके लीडरी विभाग द्वारा रची घटना-खबर ही पूरी तरह छा जाती है। हमारा बार-बार का अनुभव है कि एग्रीमेन्ट, हड़ताल, तालाबन्दी, मार- पीट, चार्जशीट, ट्रान्सफर, सस्पेन्ड, टरमिनेट वाली घटनायें ऐसे अखाड़े बनाती हैं जहाँ चित और पट दोनों मैनेजमेन्ट की होती हैं। इसके बावजूद यह हमारी चर्चाओं के केन्द्र में रहती हैं और बार-बार हम इनके जरिये ही अपनी समस्याओं के समाधान ढूँढते हैं।

विशेष का महिमामंडन

सामान्य, दैनिक, रोजमर्रा को महत्वहीन और विशेषता-खासियत द्वारा चमत्कार की आशा का यह असर है कि हम मैनेजमेन्ट व उसके लीडरी विभाग द्वारा हड़ताल- तालाबन्दी-सस्पेन्ड जैसी घटना रच दिये जाने पर मैनेजमेन्ट-लीडर एग्रीमेन्ट में अथवा इनकी सरपरस्त सरकार के हस्तक्षेप में अपने लिये राहत की आशा लगाने को मजबूर होते हैं — अनुभवों की सीख के बावजूद।

विशेष को महत्व देना और खुद के महत्व से इनकार करना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अनुभवों की रोशनी में स्वयं के कदमों को हर हालात में प्राथमिकता व सर्वोपरि महत्व देना आपसी विचार-विमर्श के लिये एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

जाल के ताने-बाने

लिसिलेवल आटोलेक मजदूर : "इस शीशे के मकबरे में दफन हो कर भी हम जी रहे हैं। यूनियन लीडर के चक्कर में हम नहीं आये तो मैनेजमेन्ट परेशान हो गई। 250 वरकरों में किस-किस के सिर पर और कब तक मैनेजर खड़े रहें ? स्टाफ के 200 लोग भी मजदूरों से कोई खास बेहतर नहीं हैं। धमका कर किसी मजदूर से प्रोडक्शन बढवा भी लिया तो क्वालिटी ऐसी निकली की डिस्पैच किया माल वापस आ गया।

" मैनेजमेन्ट ने चाल चली। सब वरकरों से तो बात हो नहीं सकती कह कर परसनल मैनेजर ने हम से वर्क्स कमेटी बनाने को कहा ताकि एग्रीमेन्ट हो सके। हम झाँसे में आ गये और फिर चन्दा देने लगे हालाँकि एक बार हम से चन्दा और मैनेजमेन्ट से पैसे ले कर हम में से सस्पेन्ड हुये कुछ लीडर टाइप लोग चलते बने थे।

" एग्रीमेन्ट की मैनेजमेन्ट को सख्त जरूरत है। पिछली एग्रीमेन्ट की मदद से उत्पादन 40 करोड़ 78 लाख रुपये से बढा कर 90 करोड़ 60 लाख तक पहुँचाया है। इधर हमारा चेयरमैन-एम. डी. अपने मुँह से कहता रहा है कि मजदूरों की तनखा बहुत कम है, इस महँगाई के जमाने में 1500 रुपये से कुछ नहीं हो सकता।

" बड़े साहब की बातों से हम सपने देखने लगे थे पर वर्क्स कमेटी से मैनेजमेन्ट ने कहीं 15 तो कहीं 30 परसैन्ट वर्क लोड बढाने के बदले में तीन साल में 700 रुपये देने की बात की और इन 700 में डी.ए., इनसेन्टिव, वर्दी-जूते सब शामिल हैं। अब बहस 700 को 800 या 900-1000 करने पर होगी — वर्क लोड बढाने के साथ नौकरियाँ तो जायेंगी ही।

" वर्क्स कमेटी के जरिये लीडर पैदा करके मैनेजमेन्ट ने हम 250 को 8 में सिकोड़ा। अब एकता के नाम पर इन 8 को अपनी लाठियाँ बना कर मैनेजमेन्ट हमारे खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश करेगी।"

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

आदान-प्रदान जानकारियों का

एक बुजुर्ग : " मेरा बेटा जान मुहम्मद पीके इन्टरप्राइजेज में काम करता है। 19 फरवरी को एक्सीडेन्ट हुआ। मैनेजमेन्ट ने जान मुहम्मद को सनफ्लैग अस्पताल में भर्ती करवाया। बड़ा आपरेशन हुआ और चार दिन बाद बेटे ने हम से बात की। सात दिन बाद भी मेरा बेटा आई.सी.यू. में है। आज 26 फरवरी को सनफ्लैग अस्पताल के डॉक्टरों ने हमें बेटे से मिलने से यह कह कर रोक दिया कि बार-बार कहने पर भी पीके इन्टरप्राइजेज मैनेजमेन्ट ने आपरेशन व आई. सी.यू. के बिल जमा नहीं करवाये हैं।"

प्लासर इंडिया वरकर : " 99 के चक्कर में ऐसे फँसे हैं कि भूल ही गये हैं कि छुट्टी भी कोई चीज होती है। रोज तो 4 घन्टे ओवर टाइम करना ही पड़ता है, हर सन्डे को भी ओवर टाइम। यह तो आज शिवरात्री और सन्डे इकट्ठे पड़ गये इसलिए घर पर हैं। बहुत थक गये हैं।"

गुडईयर मजदूर : " क्युरिंग में गरमियों में तापमान 60 डिग्री सेन्टीग्रेड तक हो जाता है पर कूलर हैं ही नहीं और एग्जास्ट जो हैं वे काम नहीं करते। इधर क्युर टाइम 5 मिनट कम करके मैनेजमेन्ट ने बी-लाइन पर 7 की जगह 8 लोड निकालने को कहा। वरकरों ने काफी ना-नुकुर की। कई मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने लालच दिया और कई को धमकाया भी पर मजदूर 7 की जगह 8 लोड के लिये राजी नहीं हुये। ऐसे में एक दिन यूनियन ने अपने दो पक्षधर वहाँ लगाये (वे क्युरमैन जॉब वाले भी नहीं थे) और उन्होंने 8 लोड निकाले। उसके बाद मैनेजमेन्ट ने कहना शुरू किया कि जब यह कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कर सकते। "घोर अनैतिक कार्य", "कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई" वाले नोटिस लगा कर गुडईयर मैनेजमेन्ट ने बी-लाइन मजदूरों पर 7 की जगह 8 लोड लादे। ऐसे ही धमकी और भर्त्सना-भरे नोटिस मैनेजमेन्ट अब ए, सी, डी, ई, एफ लाइनों के वरकरों पर लोड बढाने के लिये लगा रही है। कैलक्युलेटर पर उँगलियाँ घुमा कर कहते हैं कि और लोड निकालो पर वरकर साँस कब लेंगे यह कैलक्युलेटर से नहीं बताते।"

ठेकेदार का वरकर : " जनवरी में टेलीफोन एक्सचेंज में 60 हजार रुपये नकद और केबलों की चोरी की खबर फैली। जाँच के नाम पर पुलिस ने सेक्युरिटी ठेकेदार के एक गार्ड तथा बिजली ठेकेदार के एक मजदूर को कई दिन थाने में बन्द रख कर पीटा और फिर छोड़ दिया।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : " बन्द किये रैस्ट रूम में चूहे के बिल जितना सुराख देख कर मैनेजमेन्ट ने सेक्युरिटी सुपरवाइजर की देख-रेख में मिस्त्री से सीमेन्ट से उसे भरवाया और फिर बन्द रैस्ट रूम के बाहर दो सेक्युरिटी वालों की ड्युटी लगा दी। चूहों की ही तरह वरकर चुपचाप व्यवहार करने लगें तो एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट को फार्मट्रैक प्लान्ट में ही 6 हजार सेक्युरिटी गार्ड लगाने पड़ेंगे!"

कमला सिनटैक्स मजदूर : " कल मीटिंग की सुनी है। अबकी बार छोड़ेंगे नहीं। हिसाब लेना तो कोई बात नहीं, अबकी बार सबक सिखायेंगे। एक बार हमने मैनेजमेन्ट के सामने ही लीडर को पीटा था। अब हमने लीडरों में एक मार-पीट करने वाला बन्दा रखा है और एक बातचीत में तेज-तर्रार को रखा है। अबकी बार फैसला नहीं हुआ तो मारेंगे। फिर कैसे नहीं मिलता हिसाब देखेंगे.... **झालानी टूल्स मजदूर:** " नौजवान दोस्त, ऐसी कई मीटिंगें कमला सिनटैक्स मैनेजमेन्ट और लीडरों की हो चुकी हैं। जहाँ तक पिटाई वाली बात है तो वह भी कई फैक्ट्रियों में हुई है पर उससे समस्यायें हल होने की बजाय और जटिल हुई हैं ...."

कैजुअल मजदूर : " आजकल टेकमसेह में काम करता हूँ। लीडरों ने आज कैजुअलों को बाहर निकाल दिया है क्योंकि परमानेन्ट मजदूरों ने एग्रीमेन्ट अनुसार तनखा कटने पर लीडरों को गालियाँ दी। एग्रीमेन्ट लीडरों ने की है और अब लीडर लोग ही हम कैजुअलों की दिहाड़ी मरवा कर लड़ाकू बन रहे हैं।"

आयशर ट्रैक्टर वरकर : " आजकल की मैनेजमेन्टें बाल की खाल निकालती हैं। अनाड़ीपने से इनसे नहीं निपट सकते। सोच-समझ कर कदम उठाने से ही बात आगे बढ सकती है।

" मैनेजमेन्टें अपने पक्ष की बातें ही बताती हैं। जो बातें उनके खिलाफ होती हैं उन्हें वे छिपाती हैं। वरकरों के पक्ष की बातें तो होती ही हैं मैनेजमेन्टों के खिलाफ ...

" काम सब करते हैं पर मजदूरों को एक-दूसरे के खिलाफ करने के लिये आयशर मैनेजमेन्ट इस-उस को जीरो डिफैक्ट वाला घोषित करके इनाम देती है।

"आदमी को आयशर के अन्दर पीस रहे हैं और बाहर गेट पर मन्दिर बना कर पत्थर की मूर्ति की पूजा कर रहे हैं।"

रफ्तार जानलेवा है

महालक्ष्मी होटल मजदूर : " 1600 तनखा बताती है और ई. एस.आई. व फन्ड काट कर 1200-1300 रुपये मैनेजमेन्ट देती है। कोरे रजिस्टरों पर टिकट लगा कर हम से हस्ताक्षर कराती है।"

चलते-चलते

आर.आर. इन्डस्ट्रीज मजदूर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया प्लान्ट में हम 45 वरकर हैं। तीन-चार साल काम करते हो गये पर न तो ई. एस.आई. है और न फन्ड। कोई मजदूर कुछ बोलता है तो उसे 24 सैक्टर में जो 3-4 प्लान्ट हैं उनमें से किसी में भेज देते हैं।"

सेक्युरिटी वरकर : " मैंने दिव्या सेक्युरिटी, दूबे सेक्युरिटी, हिन्दुस्तान सेक्युरिटी में काम किया है। 1400 रुपये तनखा देते हैं और 12 घन्टे ड्युटी लेते हैं। कोई छुट्टी नहीं। क्या कभी यह ठेकेदारी खत्म होगी?"

मार्शल फाउन्ड्रीज मजदूर : " कई प्लान्ट हैं। ई.एस.आई. कार्ड तो देते हैं पर परमानेन्ट किसी भी वरकर को नहीं करते। काम कहीं लेते हैं और दिखाते कहीं और हैं।"

इनवेल ट्रान्समिशन वरकर : " निर्धारित जॉब से हटा कर अन्य जॉब करने को मजबूर कर रहे हैं। 3-4 मजदूरों को सस्पेन्ड कर दिया है। माहौल गरम करके मैनेजमेन्ट ने ग्रुप फोर की हटा कर सेन्टिनल सेक्युरिटी लगा दी है।"

जे.वी. इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : " एक घन्टा यहाँ काम करो, दो घन्टा वहाँ काम करो. ... मैनेजमेन्ट ने हालत खराब कर रखी है।"

हिन्दुस्तान सिरिंज वरकर : " दुनियाँ-भर का अनुशासन है इस कम्पनी में।"

बाकमैन इंडिया मजदूर : " 90 मजदूर हैं पर किसी को भी परमानेन्ट नहीं किया है — 10-12 साल वालों को भी नहीं। न तो ई.एस. आई. है और न फन्ड। हैल्परों को महीने में 1200 रुपये देते हैं। तनखा 7 से पहले देने की बजाय 24-25 तारीख को देते हैं।"

क्युअरवेल वरकर : " दिसम्बर का वेतन 12 फरवरी को जा कर दिया है।"

एन.सी.बी. मजदूर : " सीमेन्ट रिसर्च इन्सटीट्युट में ठेकेदार 16 महीनों से फन्ड काट रहा है पर हमें स्लिप नहीं मिली है। ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं दिया है।"

सेवा इन्टरनेशनल वरकर : " मैनेजमेन्ट टाइम पर वेतन नहीं देती। ओवर टाइम का पैसा भी नहीं दे रही। काम का बोझ बहुत ज्यादा है।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद-121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 1999 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

अनुभवों की गूँज

बैंक वरकर : "पहले मैं फौज में था और वहाँ हमें बलि के बकरे बनाये रखा। अब मैं बैंक में नौकरी करता हूँ तो यहाँ हमें चूस रहे हैं। ये जो लाल किले से बोलते हैं, मीटिंगों में भाषण देते हैं, संसद में बोलते हैं उसमें और मज़दूरों के साथ जो हो रहा है उसमें जमीन-आसमान का फर्क है।"

बत्रा एसोसियेट्स मजदूर : " मैं, यशवीर सिंह, फरवरी 95 से परमानेन्ट वरकर हूँ। 29 जून 98 को मैनेजमेन्ट ने बिना आरोप-पत्र के मुझे सस्पेन्ड कर दिया। मैंने लेबर अफसर और लेबर इन्सपैक्टर को लिखित शिकायतें की पर उन्होंने मेरी नहीं सुनी। तारीख पर कम्पनी आती ही नहीं और कोई आता भी है तो तारीख ले कर चला जाता है। मुझे सस्पेन्शन अलाउन्स भी 5 महीने बाद दिया।"

कैजुअल वरकर : " **एस्कोर्ट्स** में कैजुअलों को एक दिन में ही कई जॉबों पर लगा देते हैं। सुपरवाइजर हमारे साथ बहुत गलत व्यवहार करते हैं। कैजुअलों को गधे समझते हैं। बड़ी मुश्किल से सिफारिश से कैजुअल की नौकरी लगती है और सुपरवाइजर वह 6 महीने भी नहीं गुजारने देते। 30-35 साल के होने पर तो कैजुअल भी नहीं रखेंगे जबकि तब तक बाल-बच्चे भी हो जायेंगे। गुजारा कैसे होगा ? कैसे ये समस्या हल होगी ?"

एक बुजुर्ग : "डाकखाने में काम करता था। तीस साल पहले पत्नी की मृत्यु हुई तो सोचा कि जीवन बेकार हो गया। दो लड़के थे, उन्हें पालने में अपने को खपाया। दोनों लड़के अब अच्छी नौकरी करते हैं। सोचा करता था कि रिटायर होने पर आराम से रोटी खाऊँगा और सब दुख खत्म हो जायेंगे। रिटायर हुये 6 साल हो गये हैं पर अब मेरी याद किसी को नहीं आती, कोई मुझे नहीं पूछता। जो सोचा था उससे 100 परसैन्ट उल्टा हो रहा है।"

बिजली बोर्ड वरकर : " रिटायर होने में दो महीने हैं। लड़कों की नौकरी नहीं लगी है। अभी ही लड़के पूछते हैं, 'दुकान बन्द करके कहीं चले गये थे क्या?' रिटायर होते ही इस खोखे से और जकड़ जाऊँगा। अब घर बन रहा है पर लगता है कि मैं तो इस खोखे में ही रहूँगा। इतनी उठा-पटक का यह नतीजा ! सोचता था कि बुढापे में आराम करूँगा पर आने वाले दिन तो और भी खराब दीख रहे हैं।"

एक युवा : "गाँव में गरीबी है। शहर में बेरोजगारी है। आशा की किरण बुझती जा रही है।"

आयशर ट्रैक्टर वरकर : "19 फरवरी को स्टोर में 90-90 किलो की तीन पेटियाँ गीता राम पर गिरी। मैनेजमेन्ट ने अपनी खतरनाक कार्य पद्धति छिपाने के लिये बुरी तरह घायल मजदूर को दिल्ली में एक प्रायवेट अस्पताल में भर्ती करवाया। 21 फरवरी को गीता राम जी की मृत्यु हो गई। तब डॉक्टरों ने अपने बचाव के लिये पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई जिससे फैक्ट्री में चोट लगने की बात सामने आई। मैनेजमेन्ट लीपापोती में लगी और गीता राम जी की लाश दो दिन रखी रही। मैनेजमेन्ट ने दाहसंस्कार दिल्ली में ही कर दिया। बुजुर्ग मजदूर की मृत्यु पर एक मिनट भी लाइन बन्द नहीं करने दी मैनेजमेन्ट ने। कुछ वरकर दाहसंस्कार में शामिल होने के लिये छुट्टी भर कर जाने पर अड़ गये तब मैनेजमेन्ट ने उन्हें जाने दिया पर उन्हें गाड़ी नहीं दी।"

झालानी टूल्स मजदूर : "60 लाख रुपये महीना फरीदाबाद प्लान्टों में मजदूरों की तनखा बनती है पर मैनेजमेन्ट 20 लाख रुपये से कम दे रही है और वह भी दिसम्बर 98 की तनखा फरवरी 99 में की तर्ज पर। मजदूरों का 21 महीनों का वेतन पहले ही बकाया है। प्रोविडेन्ट फन्ड और ई.एस.आई. के करोड़ों रुपये मैनेजमेन्ट ने जमा नहीं करवाये हैं। बिजली के बिल जमा नहीं करने के कारण दो साल से लाइन कटी हुई है और जनरेटर खस्ताहाल हो गये हैं। स्टाफ की भी 26 महीनों की तनखा बकाया हो गई है..... ऐसे में 'धड़ाके से चलेगी' और 'नई एग्रीमेन्ट' जैसे शोशे मैनेजमेन्ट टाइम ब टाइम छोड़ती रहती है। लेकिन खुलेआम अपनी कमेटियाँ बना कर प्लान्टों के अन्दर मजदूरों की पिटाई करवा कर भी मैनेजमेन्ट अब तक मजदूरों के 40 करोड़ रुपये हजम नहीं कर पाई है। ऐसे में मैनेजमेन्ट ने पलट कर फिर सीटू और भूतपूर्व-सीटू की फूँ-फाँ में मजदूरों को उलझा कर अपना उल्लू सीधा करने की राह पकड़ी है। खा-पी कर अब तक फरार हो जाने से तो मैनेजमेन्ट को रोकने में हम सफल रहे हैं और आज हर झालानी टूल्स मजदूर के सामने अपने फँसे हुये पैसे निकालना एक प्रमुख मुद्दा है।"

विकल्पों के लिये प्रश्न

वर्तमान बहुत ही दर्दनाक है, बरदाश्त की सीमाओं के बाहर चला गया है।

जैसे-तैसे मर-पिट कर हम दिन काटते हैं – इस आशा में कि अगली पीढी बेहतर दिन देखे।

लेकिन बरबादी बढती जा रही है।

और, वर्तमान लड़खड़ा रहा है।

कैसे जीयें और किस प्रकार के भविष्य के लिये प्रयास करें कि आने वाली किसी भी पीढी को ऐसा वर्तमान न देखना पड़े।

वर्तमान के स्तम्भों और इसकी ईंट-गारा को चिन्हित कर, पहचान कर और नकार कर-ठुकरा कर-रिजेक्ट करके ही विकल्पों के प्रश्नों पर व्यापक सोच-विचार व चिन्तन हो सकता है।

इस सिलसिले में यहाँ हम एक नियमित चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

वर्तमान की ईंट-गारा

विचार–विमर्श की शुरुआत में बेहतर शायद यही है कि वर्तमान के प्रमुख स्तम्भों और इसकी ईंट–गारा को हम मोटे–मोटे तौर पर चिन्हित करें।

फैक्ट्रियाँ प्रतीक हैं वर्तमान की। तीव्र से तीव्रतर गति, अधिकाधिक वर्क लोड, बढती असुरक्षा और फैलता डर प्रगति व विकास के मूल तत्व हैं। वायु, जल और जमीन का बढता प्रदुषण जीवन के हर क्षेत्र में फैक्ट्री पद्धति को फैलाने की गूँज मात्र हैं। घर–दफ्तर–बस्ती–शहर–देश की सीमाओं की किलेबन्दी लोहे की ग्रिलों से घिरे खिड़की–दरवाजे–छज्जों, बन्दूकधारी गार्डों, जगह–जगह लगे खुफिया कैमरों, तोपों–टैंकों से सैटेलाइटों के जरिये संचालित–निर्देशित प्रक्षेपास्त्रों तथा बटन दबाने के इन्तजार में तहलके मचाने को तत्पर अणुबमों तक प्रगति कर चुकी है। विशाल से विशालतर होते शहरों की जल की पूर्ति व मल की निकासी की आवश्यकतायें ही हिटलरों की माँग करने तक विकास कर गई हैं। चिकनी चौड़ी सड़कें–ओवर ब्रिज–लाल पीली हरी बत्तियाँ ; सुपर थर्मल पावर हाउस व अणु विद्युत गृह और हजारों मील फैले तार; प्रति मिनट दो–तीन उतरते व उड़ान भरते वायुयानों वाले हवाई अड्डे.....इस कदर विशेषज्ञताओं की माँग करते हैं कि इनके लिये बचपना सिकुड़ कर पहली से के.जी. की राह नर्सरी होते हुये प्री–नर्सरी में पहुँच गया है। कम्प्युटरों के विकास के संग स्कूल–कालेजों में छात्रों के लिये दवाइयों–ड्रगों–आत्महत्या में से चुनने की आवश्यकता तक प्रगति हो चुकी है। गाँव–देहात की विगत की कठोरता व ऊँच–नीच में क्रूरता का विकास हो रहा है।

विगत व वर्तमान के अनुभवों के दृष्टिगत वर्तमान के स्तम्भों व ईंट–गारा को चिन्हित करने और कुरेद कर इनके तन्त को पकड़ने की प्रक्रिया विकल्पों के खाकों पर चर्चाओं के बिना अपूर्ण है। वर्तमान को दफा करने के लिये विकल्पों की कल्पनायें और उन पर व्यापक चर्चायें एक अनिवार्य आवश्यकता हैं। (जारी)

एग्रीमेन्टों का जँजाल

सूडट्रैक मजदूर : "एग्रीमेन्ट का लफड़ा चल रहा है। एग्रीमेन्ट में होता यह है कि बीस ले लेते हैं और दस दे देते हैं।"

गुडईयर वरकर : "3 साल पहले क्या एग्रीमेन्ट की, क्या नहीं की यह तो हमें नहीं मालूम पर हुआ यह है कि प्रोडक्शन 25-30 परसैन्ट तक बढा देते हैं पर इनसेन्टिव 90 रुपये पर सील रहता है।"

पोरिट्स स्पैन्सर मजदूर : " हमारे यहाँ एग्रीमेन्ट हो गई है। अब धीरे-धीरे ही पता चलेगा कि क्या कुछ हुआ है।"

बाटा वरकर : "1990, 1994 और 1998 की तीनों एग्रीमेन्टों में काम बाहर करवाने; डिपार्टमेन्टें बन्द करने; प्लिमसोल जूतों का उत्पादन 1660 से बढा कर 2000 पेयर प्रति लाइन प्रति दिन तथा हवाई चप्पलों का उत्पादन 2500 से बढा कर 2800 करना और इनके लिये सहायक कार्य में लगे मजदूरों द्वारा भी उत्पादन बढाना; 'ऐसे एक्शनों के प्रत्यक्ष परिणाम के तौर पर छँटनी नहीं' के लबादे में छँटनी करने की धारायें हैं। तीन बार साइन करके भी मैनेजमेन्ट और यूनियन एग्रीमेन्टों की मुख्य धारायें लागू नहीं कर पाई हैं। इन दस साल में कभी इस डिपार्टमेन्ट तो कभी उस डिपार्टमेन्ट के मजदूरों को हमले का निशाना बना कर टुकड़ों में एग्रीमेन्ट थोपने में मैनेजमेन्ट जुटी रही है। पर हर जगह मजदूरों के अनेकानेक कदम मैनेजमेन्ट के लिये लोहे के चने बने हैं। ऐसे में मैनेजमेन्ट ने 6 महीने तैयारी की। खूब प्रोडक्शन करवाया और गोदामों में माल भर लिया। इधर लीडरों ने दो हफ्ते फूँ-फाँ करके 24 फरवरी को एक दिन की हड़ताल की और 25 से मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी कर दी। यह सब पिछले तीन एग्रीमेन्टों की मुख्य धाराओं को लागू करने के लिये है। थोड़े दिन में इस-उस रोने की आड़ में 'नया समझौता' करके पुरानी एग्रीमेन्टों की ही बातों को मनवाने की नौटंकी होगी। धोखे-भुलावे में तो नहीं ही आना चाहिये। और क्या-कुछ कर सकते हैं ?"

कटलर हैमर मजदूर : "जब माल बिक जायेगा तभी तनखा मिलेगी वाला पहले का एग्रीमेन्ट ही कमाल का था। जो पैसे बढे थे वह भी मैनेजमेन्ट ने आज तक नहीं दिये। अब नई एग्रीमेन्ट में ही क्या होना है ? हमें किसी लीडर पर विश्वास नहीं है।"

टेकमसेह वरकर : "हमने लीडरों को घेरा और उन्हें कहा कि यह एग्रीमेन्ट हमें नहीं चाहिये, इसे रद्द करो। तब लीडर भी बोलने लगे कि यह एग्रीमेन्ट ठीक नहीं है; पैसे काट कर मैनेजमेन्ट ने गलत किया है; वे बात करेंगे। काटे हुये पैसे लौटा कर मैनेजमेन्ट ने थपथपा कर मामला टाला है। असली लफड़ा तो बल्लभगढ शिफ्ट होने के बाद है। यह एग्रीमेन्ट मैनेजमेन्ट लागू कर पायेगी तो हम में से ज्यादातर की तो नौकरी ही नहीं रहेगी।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "पुचकारने के लिये 22 की बजाय 15 फरवरी को जनवरी के इनसेन्टिव के पैसे मैनेजमेन्ट ने बाँटे। चर्चा है कि जनरल एग्रीमेन्ट करके मोड्युलवाइज मिनी एग्रीमेन्ट होंगी क्योंकि काम तो हम वरकरों से ही लेना है। मिनटों की जगह सैकेन्डों में हिसाब कर रही एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट पुचकार और डर के दो पाटों में हमें पीसने की तैयारी कर रही है।"

सी.एम.आई. वरकर : "एग्रीमेन्ट ने प्रोडक्शन 52 हजार से बढा कर 63 से 65 की राह 67 हजार तीसरे साल के लिये रखा है और इसके बदले में 210 रुपये! एग्रीमेन्ट से पहले 52 हजार से थोड़ा ज्यादा उत्पादन करने पर हमें 200 से 400 रुपये इनसेन्टिव के मिलते थे। एग्रीमेन्ट ने इनसेन्टिव के वे पैसे भी समाप्त कर दिये। 8 घन्टे ड्युटी के बाद 4-8 घन्टे ओवर टाइम लगवाते हैं पर पैसे दिहाड़ी के बराबर भी नहीं देते और ओवर टाइम को हिसाब-किताब में नहीं दिखाते। चाय तक की व्यवस्था नहीं है — ड्युटी के बाद ओवर टाइम करो और भूखे मरो।"

व्हर्लपूल एग्रीमेन्ट की कुछ धारायें :

"6...... यूनियन तुरन्त प्रभाव से 2800 पैक रेफ्रिजरेटर प्रतिदिन अर्थात 933 पैक रेफ्रिजरेटर प्रति पाली कामगारों के द्वारा उत्पादन देने के लिये सहमत है। **(यानि, 1875 से शुरू होता और 2800 फ्रिज पर 700 रुपये से अधिक बनता इनसेन्टिव खत्म। आगे चल कर तनखा काटने के लिये दरवाजा।)**

..... मैनपावर का डिप्लायमेन्ट इन्डस्ट्रियल इंजिनियरिंग विभाग द्वारा निर्धारित मापदण्ड के आधार पर होगा। **(यानि, वर्क लोड बढाने और छँटनी के लिये दरवाजा।)**

16. ..... यदि भविष्य में वी आर एस स्कीम लाई जायेगी तो उस समय प्रबन्धक व यूनियन आपस में बातचीत कर निर्णय लेंगे तथा यूनियन इसको लागू करने में अपना पूरा सहयोग देगी। **(यानि, छँटनी की स्कीम तैयार है और यूनियन खुलेआम मजदूरों को नौकरी से निकालने में बढ-चढ कर हिस्सा लेगी।)**

19. प्रबन्धकों ने समस्त कामगारों को रु 5/- देने का निर्णय लिया है जो किसी भी प्रकार से वेतन का अंग नहीं होगा। यह यूनियन के चन्दा में जायेगा। **(यानि, मैनेजमेन्ट अपने लीडरी विभाग को नियमित तौर पर खुलेआम भी पैसे देगी।)**

धीरे चलो

रचना घटना की

चौतरफा छाये बोझिल माहौल को हल्का करने के लिये हर रोज, हर जगह, प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई प्रयास करता है, कदम उठाती है। हमारे यह प्रयास "हाँ" या "नहीं", "काला" या "सफेद" मात्र के भेद वाले नहीं होते। विभिन्न पहलुओं, अलग-अलग कोणों-दिशाओं-स्तरों वाले कदम उठते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी मजबूरी अथवा सहुलियत के अनुसार कदम उठाता है, अपने-अपने व्यक्तित्व के मुताबिक कदम उठाती है। इसलिये हमारे यह प्रयास अनेकानेक होते हैं। हमारे यह कदम खुद अक्सर दिखाई नहीं देते पर इनके असर जल्दी ही या देर से अवश्य देखे व महसूस किये जाते हैं।

अनगिनत, अनन्त, अनेकानेक कदमों द्वारा पैदा की जाती कम्पनों को स्तब्ध करता है, चौंकाता है अचानक कोई सस्पेन्शन-निलम्बन। यह तत्काल एक केन्द्र बिन्दु बनता है। अनेकता सिकुड़ती है और "काला" बनाम "सफेद" का मँच-अखाड़ा उभरता है, उभारा जाता है। विशेषता की जरूरत को यह घटना, यह अखाड़ा उभारता है। जवाब देने में विशेषज्ञ, सौदेबाजी में माहिर, समझौते करने में एक्सपर्ट मँच सम्भाल लेते हैं। यह विशेषज्ञ सोचने-समझने, निर्णय लेने, कदम तय करने और आदेश देने के अधिकारी बन जाते हैं।

एक सस्पेन्शन जैसी घटना भी इस प्रकार मजदूरों को दर्शकों-श्रोताओं-चन्दा देने वालों-ताली बजाने वालों-नारे लगाने वालों में बदलने के खतरे लिये है। इसी प्रकार की भूमिका ट्रान्सफर, चार्जशीट, टरमिनेशन, हड़ताल, तालाबन्दी, एग्रीमेन्ट, जलूस, मीटिंग की घटना निभाती हैं। दरअसल घटनायें मैनेजमेन्टों और उनके लीडरी विभाग द्वारा रची जाती हैं — अपने अखाड़ों में मजदूरों को घसीट कर अपने काबू में रखने के लिये।

'मजदूर समाचार' में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, मजदूर लाइब्रेरी में आराम से बैठ कर बतायें।

अपनी बातें अन्य मजदूरों तक पहुँचाने के लिये 'मजदूर समाचार' में भी छपवाइये। आपका नाम किसी को नहीं बतायेंगे और आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे।

महीने में एक बार ही 'मजदूर समाचार' छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। किसी वजह से सड़क पर आपको नहीं मिले तो 10 तारीख के बाद मजदूर लाइब्रेरी आ कर ले सकते हैं — बोनस में कुछ गपशप भी हो जायेगी।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।